कुछ गीत अनाम के नाम

के. के. सिंह "मयंक"

कुछ गीत अनाम के नाम

कृष्णकुमार सिंह "मयंक"

प्रथम संस्करण — अप्रेल १९८२

काव्य संकलन — कुछ गीत अनाम के नाम

रचनाकार — कृष्ण कुमार सिंह "मयंक"

सर्वाधिकार — लेखक के सुरक्षित

आवरण चित्रकार — शकर वर्जुनिया, जावरा (म. प्र.)

प्रकाशक — नभेन्दु कुमार बनर्जी

द्वारा

सप्तरग (सांस्कृतिक संस्था)

पेलेस रोड, रतलाम-४५७००१

मुद्रक — कीर्ति प्रिंटिंग प्रेस, ☎ ३७

७५, फ्रीगज रोड, रतलाम

समर्पित

मेरे परम पूज्य पिता
स्वर्गीय श्री ईश्वरीप्रसादजी
के नाम जो आज भी आदर्श
व प्रेरणा बनकर हृदय में
समाये हैं ।

दो शब्द

शंकर शम्भू

विगत तीस वर्षों से दरगाहों पर, मंदिरों पर, महफिलों में रेडियों, टेलीविज़न तथा फिल्मों में गा रहे हैं। कई गीतकार, शायर और पत्रकारों से मुलाकात हुई हैं।

कई मिले और मिलकर बिछुड़ गये किन्तु श्री कृष्णकुमार-सिंह "मयंक" से मिले तो फिर बिछुड़ नहीं पाए "मयंक" जी 'हमारे हम वतन है' इसलिये नहीं बल्कि उनकी रचनाओं ने हमारे दिल में जगह बनाली है।

खुशी है चन्द लम्हों की ! मगर आंसू तो बहते हैं
खुशी में भी वे बहते हैं ! गमों पे भी वे बहते हैं।

इनसे मिलकर इतनी खुशी हुई के बरबस आंखों में आंसू आ गये। लोग सामान्य अधिकार पाते ही बोखला जाते हैं जबकि

कृष्णकुमारसिंह "मयंक" इतने बड़े जिम्मेदाराना ओहदे पर,
होते हुवे भी बहुत सरल और सोम्य है
गांव छोड़े हमें अर्सा हो गया मगर इनकी कविता
"भूला पड़ी कदम की डार" पढ़कर आंखों के सामने
वही मंज़र नज़र आजाते हैं मानों हम उत्तर-प्रदेश के
अपने वतन में बालाओं को झूलते हुये देख रहे हैं ।

"मयंक" जी ने हर रंग में लिखा है और बहुत खूब लिखा है और लिखते ही जा रहे हैं । एक ग़ज़ल पढ़कर ऐसा लगा कि इनको कितना विश्वास है अपने प्यार में और अपनी लगन में–

हमें भूलकर तुम दिखाओ तो जाने ।
न हमको कभी याद आओ तो जाने ।।

और ऐसा ही कुछ नज्म की सूरत में बन पड़ा है ।

निगाहें यार का अंदाज कुछ निराला है ।
कि दिल की दुनिया में इनसे ही हो तो उजाला है ।।

इनके लिखे लोकगीत, नज्में, ग़ज़लें और राष्ट्रीय गीत हमारे पथ प्रदर्शक हैं ।

इनकी कलम से निकली लेखनी बच्चों बच्चों की जुबान पर रहे । इसी कामना के साथ–

शंकर शम्भू
कव्वाल व संगीत निर्देशक
शंकर शम्भू सदन, दौलत नगर, रोड क्रमांक ९
बोरी वली, बम्बई–६६ (पूर्व)
दूरभाष : ६६१९४१

कृष्णकुमार सिंह "मयंक"

लेखक की ओर से

स्वयं के बारे में कुछ लिखना ऐसा कार्य हैं जिसका अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है।

मुझ से जब भाई नभेन्दु बनर्जी ने लिखने का आग्रह किया तो लगा कि पर्वत लांघने का आदेश मिला है। माता पिता का दिया हुआ नाम किशन था, जो स्कूल में कृष्णकुमार सिंह हो गया और मेरी ओर से "मयंक" जुड़ गया।

उत्तर प्रदेश के ग्राम पडरारी कस्बा र या तथा जिला मथुरा में सन १९४४ (ई) को मेरा जन्म हुआ। लेखक, कवि या श यर की पक्ति में तो अभी भी नहीं आता हूं।

शौक़ कुछ इस तरह पैदा हुवा कि शुरु शुरु में लोक धुनों पर गीत लिखना प्रारंभ किया, ऐसा मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि पर हो रहे लोक साहित्य के प्रति रूचि होने के कारण हुआ। बृज की पावन भूमि स्वतः ही ऐसा शौक़ पैदा कर देती है।

फिर गीत, ग़ज़ल, नज़्म वगैरा लिखना प्रारंभ किया और ना मालूम कब ये शौक नशे में बदल गया और अब तो जब भी फुर्सत मिलती है कुछ न कुछ कहता ही रहता हूं।

हिन्दी समाज राजकोट के सौजन्य से प्रसारित आकाश-वाणी राजकोट केन्द्र द्वारा कुछ लोक गीत भी रेकार्ड हुये जो यदा-कदा सुने जा सकते हैं।

सही मानों में मुझे गज़ल लिखने की प्रेरणा स्वर्गीय श्री दुष्यंतकुमारजी की गज़लों से मिली उनकी गज़लों की विशेषता यह है कि उनमें हिन्दी उर्दू और रात-दिन मुहावरे में आने वाले शब्द का एक अच्छा मिश्रण है, उनकी गज़ल का एक शेर मुझे बहुत पसंद है।

एक चिंगारी कहीं से ढुंढ लाओ दोस्तो।
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है॥

ऐसा ही रंग है दुष्यतजी का जो अपने आप में एक अमूल्य रचनाओं का खज़ाना हैं और मेरे पसन्द दिदा कवी भी दुष्यंत जी ही हैं। मैं एक उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर होने के कारण व्यस्त अधिक रहता हूँ। अतः इस पुस्तक में ढेर सारी सामग्री तो नहीं लिख दे पाया हूं, फिर भी ये चन्द भजन, गज़ल, गीत आदि आपको पसन्द आऐंगे, इस विश्वास के साथ पेश कर रहा हूं।

हिन्दी भाषी हूं हिन्दी से कुछ इस तरह से जुड़ा हूं कि इसकी जितनी सेवा करुं कम है। मेरी मातृ भाषा बृज भाषा है तथा

उसके आसपास के जिलो में बोली जाने वाली खड़ी बोली जिसमें उर्दू का बहुल्य है, जिसको बरबस ही अपनाना भी स्वाभाविक है।

दिनांक १३-८-८० को राजकोट से स्थानांतरित होकर रतलाम रेल्वे मण्डल पर वरिष्ठ वाणिज्य अधीक्षक के पद पर आया तो हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत सर्व श्री इन्द्रलाल राणा(पखावजवादक) अमजदहुसेन (गायक) फैज़ रतलामी (शायर) आर. एन. मोडक (बेंजोवादक) तथा कई कलाकारों को सुना व परिचय हुआ और खुशी हुई की इन्होंने अपने २ फन से रतलाम मण्डल के गौरव को बढ़ाया है।

भाई नभेन्दु बनर्जी को धन्यवाद देकर छोटा नहीं करना चाहता हूं किन्तु यह भी बिना कहे नहीं रह सकता कि मेरी इन रचनाओं को पुस्तक का रूप देने का श्रेय उन्हीं को जाता है, पाठकों के विचार व मार्ग दर्शन की प्रतिक्षा में यहीं लेखनी को रोकता हूं।

कृष्ण कुमार सिंह "मयंक"
द्वारा सप्तरंग (सांस्कृतिक संस्था)
पैलेस रोड, रतलाम-४५७००१

ग़ज़ल

ज़िंदगानी के ये निशाँ देखो ।
कैसे बनते हैं आशियां देखो ।।

चलते चलते जो कोई मिल जाए ।
ऐसे बनते हैं कारवां देखो ।।

हुस्न और इश्क़ साथ साथ मिले ।
फिर मोहब्बत को तुम जवाँ देखो ।।

इश्क़ में चांद और सितारे बनो ।
झिल मिलाता फिर आसमां देखो ।।

इश्क़ में ए "मयंक" लोगों ने ।
मिटाई अपनी हस्तियाँ देखो ।।

□

ग़ज़ल

कश्ती तूफ़ां में है मेरी और किनारा दूर है।
आसमां से मेरी किसमत का सितारा दूर है॥

इश्क़ वालों में हमारा नाम भी था दोस्तो।
क्या बताएं हम से अब दिलबर हमारा दूर है॥

सैकड़ो पर्दे हैं, पहरे हैं, दिवारें बीच में।
जान-ए-महबूबी के, चेहरे का नज़ारा दूर है॥

सैकड़ों दिल हैं कि जिनको उनकी कुर्बत है नसीब।
एक मेरा दिल है जो किस्मत का मारा दूर है॥

बे-सहारों में तुम अपना नाम लिखवालो "मयंक"।
क्यूं के अबतो अपने जौने का सहारा दूर है॥

★

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

जो तीर खाए तो फिर हो के बेकरार चले।
वो तीर नज़रों के महफ़िल में बार बार चले॥

क़सम ख़ुदा की पसीने घटा को आएगें।
अदाओ नाज़ से ज़ुल्फ़ो को वो संवार चले॥

वो साथ अपने न होंगे तो जान दे देंगें।
जो कूए यार से लौटे तो सूए दार चले॥

जमाना हम पे उठाएगा उंगलियां फिर भी।
तुम्हारे प्यार में हम हो के बेक़रार चले॥

तुम्हारे प्यार में हम हो गये है दीवाने।
"मयंक" कर के ये दामन को तार तार चले॥

★

ग़ज़ल

तुम्हारे वादे पे मैं एतबार कर लूंगा,
इन आंसूओं को सजाकर बहार कर लूंगा ।।

जो अश्क आंखों से टपकेंगे मेरे दामन में,
पिरो के माला में उनका सिंगार कर लूंगा ।।

न आने दूंगा में रुसवाईयां तुम्हारे तक,
फ़साने इश्क के सब अपने नाम कर लूंगा ।।

ये वस्ल-ए-रात है बे-खौफ़ तुम चले आओ,
खुलेगी बात तो इल्ज़ाम अपने सर लूंगा ।।

"मयंक" छुप गया बदली में चांद शरमा के,
तेरे हिजाब से छुप छुप के प्यार लूंगा ।।

□

ग़ज़ल

देखकर तुमको हमें प्यार ही प्यार आता है।
दिल का ये साज़ तेरे गीत गुन गुनाता है॥

कोई बहशी, कोई दीवाना, मुझे कहता है।
मेरी आंखों में तेरा अक्स झिल मिलाता है॥

आ भी जा तुझको मुहब्बत की क़सम जान-ए-हया।
जाने क्यूं दिल ये मेरा बैठ बैठ जाता है॥

ज़ाने क्या बात है इसमें ये ख़ुदा ही जाने।
उसकी चाहत में नज़र मुझ को ख़ुदा आता है॥

मेरे हालात को पाओगे मेरी गज़लों में।
"मयंक" गज़लें वही आपको सुनाता है॥

★

ग़म-ए-हयात का झगड़ा ज़रा मिटा जाओ ।
ख़ुदा के वास्ते सूरत ज़रा दिखा जाओ ।।

शहीद-ए-नाज़ हूं मैं तेरा कोई ग़ैर नहीं ।
वफ़ा के फूल जनाजे पे आ के बरसाओ ।।

हमारी रूह को तसकीन कुछ तो मिल जाए ।
तुम अपने हाथों से मय्यत मेरी सजा जाओ ।।

"मयंक" मेरे जनाज़े पे आप आके ज़रा ।
ख़ुदा के वास्ते सूरत जरा दिखा जाओ ।।

□

ग़ज़ल

देखते ही उन्हें शोले से भड़क जाते हैं ।
दिल में अंगारे मुहब्बत के दहक जाते हैं ।।

उन के गैसू जो फ़िज़ाओ में कभी खुलते हैं ।
हमने देखा है के गुलशन से महक जाते हैं ।।

आमने सामने हो जाते हैं जब हम दोनों ।
आंखों के मिलते ही प्याले से खनक जाते हैं ।।

मंज़िल-ए-इश्क़ में एसे भी मक़ाम आते हैं ।
देखने वालों के दिल भी तो धड़क जाते हैं ।।

जाम आँखों के "मयंक" होश में पीना सीखो ।
कांपते हाथों से पैमाने छलक जाते हैं ।।

□

ग़ज़ल

सितम तो देखिये मुझ पे वो ढाये जाते है।
दिखा दिखा केवो क्यूं मुस्कराए जाते है ।।

ग़ज़ब किया अभी आए अभी चले भी गये।
वो नींद आंखो से मेरी उड़ाए जाते हैं ।।

वो हमसे वास्ता रखते नहीं है फिर भी मगर।
हमारे गीतों को क्यूं गुन गुनाए जाते हैं ।।

हम उनके वास्ते बदनाम हो गए फिर भी।
सितम ये उस पे के वो आज़माए जाते हैं ।।

उन्हीं का नाम है रोशन हमारी दुनिया में।
"मयंक" चाँदनी अपनी लुटाए जाते है ।।

★

ग़ज़ल

इश्क़ की राह से गुज़रेंगे गुज़र जाएँगे ।
मौत की राह नहीं देखेंगे मर जाएँगे ॥

ये अलग बात है मंज़िल न मिले हमको मगर ।
वो मुसाफिर नहीं रस्ते में ठहर जाएँगे ॥

तेरे क़दमों में रहेंगे है तमन्ना दिल में ।
ख़ाक बन कर तेरी राहों में बिखर जाएँगे ॥

मेरी तक़दीर मुझे तुझ पे भरोसा है ठहर ।
तेरे बिखरे हुवे गैसू भी संवर जाएँगे ॥

बरसरे बज़्म "मयंक" आज ये कहते तुझसे ।
तेरे दर से जो उठेंगे तो किधर जाएँगे ॥

❑

तकिज़रे तेरे है जानेमन ।
अंजुमन, अंजुमन, अंजुमन ।।
तुझ पे कुर्बान करता हूं मैं,
जानोतन, जानोतन, जानोतन ।।
है खुदा से दुआ ये मेरी ।
हो मिलन, हो मिलन, हो मिलन ।
इश्क वालों की कैसे मिटे,
ये जलन, ये जलन, ये जलन ।।
आके मेरे बनो आज तुम,
हम वतन, हम वतन, हम वतन ।।
सुर्ख जोड़े में आ जाओ तुम,
वन दुल्हन, वन दुल्हन, वन दुल्हन ।।
तेरे गम कर भी लेंगे सनम ।
हम सहन, हम सहन, हम सहन ।
मयंक जीने लगे कीजिए,
कुछ जतन, कुछ जतन, कुछ जतन ।।

ग़ज़ल

हम ऐसा काम इश्क में कर जाऐंगे इक दिन ।
ले-ले के तेरे नाम को मरजाऐंगे इक दिन ।।

हमको यकीन है कि मुहब्बत में जान-ए-जा ।
उलझे हुए गैसू ये संवर जाऐंगें इक दिन ।।

ये सोच कर कि तेरे पड़ेंगे कही कदम ।
धरती पे खाक बन के बिखर जायेंगे इक दिन ।।

जिन रास्तों पे आऐंगी दुश्वारियां हजार ।
उन रास्तों से हंस के गुजर जाऐंगें इक दिन ।।

कूंचे में तू "मयंक" का कर लेना इन्तजार ।
रोकेगा ये जहान मगर आंयेंगे इक दिन ।।

★

ग़ज़ल

ज़ुल्फ उनकी महक महक जाए,
ज़िंदगानी बहक बहक जाऐ ।

वो नज़रें ज़रा उठाऐं अगर,
तो आग जैसे दहक दहक जाऐ ।

तिरछी नजरों से वो जो देखे कभी,
दिल हमारा धड़क धड़क जाऐ ।

उन से बादे सबा जो छेड़ करे,
सर से चुनरी सरक सरक जाऐ ।

मुस्कुराऐं "मयकं" वो जब भी,
कली जैसे चटक चटक जाऐ ।

□

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

याद आते है क्यों आज वो,
बेवफा बेवफा बेवफा ।।
कुछ नहीं जिन्दगी का बचा,
फ़लसफा फ़लसफा फ़लसफा ।।
वार करते है औ हो गए,
ख़ुद खफा ख़ुद खफा ख़ुद खफा ।।
हमको इल्जाम दो और करो,
तुम ज़फा तुम ज़फा तुम ज़फा ।।
प्यार में हमको मिल ना सका,
कुछ नफा कुछ नफा कुछ नफा ।।
इम्तहां ले के तो देखिए,
इक दफा इक दफा इक दफा ।।
"मयंक", कर न सकेगा यकीं,
हर दफा हर दफा हर दफा ।।

□

ग़ज़ल

हम तो खुश हाल थे जब तुम से मुलाकात न थी ।
दिन भी आसान थे मुश्किल भी कोई रात न थी ।।

उन की यादों ने रुलाया है मुझे शाम-ओ-सहर ।
पहले अश्कों की मेरी आंखों से बरसात न थी ।।

रात भर चांद सितारों से करें बातें हम ।
नींद आंखों से उड़ादे वो कोई रात न थी ।।

चाह के बदले मुझे आह सनम दी तूने ।
ठंडी आहों में तेरे प्यार की सोगात न थी ।।

चाहे इज़हारे महब्बत पे यकीं ना लाते ।
हार जाने की "मयंक" इसमें कोई बात न थी ।।

★

कुछ गीत अनाम के नाम

होली

आज बिरज में कान्हा खेलें होरी ।
कान्हा खेलें होरी राधा रानीखेले होरी ।।
।। आज बिरज में....।।
राधा रंग पिचकारी मारे ।
कान्हा लावें रंग कमोरी ।।
।। आज बिरज में... ।।
कान्ह के गाल रंगें राधा ने ।
कान्हा ने हंस कर उगरी मरोरी ।।
।। आज बिरज में....।।
बाबा नंद ने रंग बरसाएँ ।
भीग गई मां जसुमति भोरी ।।
।। आज बिरज में....।।
सखियां ढूंढे कृष्ण कन्हैया ।
कान्हा छिप छिप करत ठिठोरी ।।
।। आज बिरज में....।।
सखा मनसुखा होरी खेलें ।
ललिता सखी लगावत रोरी ।।
।। आज बिरज में....।।
कहत मधुक कृष्ण और राधा ।
मोसों बृज में खेलो होरी ।।

ग़ज़ल

वादे किये जो तुमने कहो क्या वो हो गये ।
लम्हे वो वस्ल-ए-शब के कहाँ आज खो गये ।।

उन पर तो ये गुमान नहीं था कभी मुझे ।
देकर हजार ग़म मेरी आंखे भिगो गये ।।

सदियों से मुन्तज़िर था न आए वो आज तक ।
अरमान जाग जाग कर सब दिल में सो गये ।।

दीवाना तेरा हम को जहां कर रहा है आज ।
ले–ले के तेरा नाम कई बार रो गये ।।

आगे मयंक कुछ भी हो अब इसका ग़म नहीं ।
हसरत के दाग थे जो महब्बत में धो गये ।।

□

ग़ज़ल

नज़र के रास्ते दिल में समाए जाते हैं,
मेरे वजूद पै दिलदार छाए जाते हैं।

नहीं हूं आपके काबिल, करो न शर्मिंदा,
फ़िज़ूल आप मेरे नाज़ उठाए जाते हैं।

वहीं झुकाये जहां मैंने सर झुकाया है,
मिरे हुज़ूर में क्यों सर झुकाए जाते हैं।

जब इश्क कर ही लिया तो जहां के क्या सदमे,
वफ़ा में इश्क के सदमे उठाए जाते हैं।

जब कभी जाते हैं हम उनकी महफ़िल में,
"मयंक" आंख के सागर पिलाए जाते है।

□

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

पास आकर दूर क्यों अब जा रहे हैं आप,
खामखां दिल को मेरे तड़पा रहे है आप।

प्यार में कुर्बान हो सकते है हम सुन लीजिए,
ये यकीं दिल में नहीं क्यो, ला रहे है आप।

बात कोई बहुत ही नाजुक रही होगी सनम,
जो मिलाने से नज़र, घबड़ा रहे है आप।

इस कदर किसने सताया आपको बतलाइए,
आज अपने अश्क क्यों छलका रहे है आप।

रोकता मयंक राह, रुक भी जाओ जानेमन,
दूर मेरी बज्म से क्यों जा रहे है आप।

□

कोई यूं बेनक़ाब आया है,
जैसे इक माहताब आया है ।

उनको आना था पर नहीं आए,
मुझको उनका ख़्वाब आया है ।

उनसे मिलने की है लगन दिल में,
आज उन पर शबाब आया है ।

मेरे इज़हारे इश्क पर यारो,
आज उनको हिजाब आया है ।

ऐ 'मयंक' उनकी हां, और ना में,
प्यार भी बेहिसाब आया है ।

□

ग़ज़ल

बात ये अलग है के, मुझसे दूर रहते हो,
पर खयालो में मेरे, तुम जरूर रहते हो ।

ग़म के कुछ अंधेरों में, जब कभी भटकता हूं,
आप राहों में मेरी, बन के नूर रहते हो ।

जब तिरे तसव्वुर में, आंख बंद करता हूं,
देखता हूं पहलु में, तुम हुजूर रहते हो ।

इक नशा सा रहता है, रात दिन मुझे हमदम,
बन के मेरी आखों में, तुम सुरूर रहते हो ।

आरजू "मयंक" की है, पास पास रहने की,
आप हो के जान-ए-जां, दूर दूर रहते हो ।

ग़ज़ल

वो जफाओ से वफाओ का सिला देने लगे,
खुद ही समझे कि भला, हमको वो क्या देने लगे।

जख्म ऐसे दे दिए है, जैसे अंगारे कोई,
और उस पै ये सितम है कि हवा देने लगे।

जान लेने पै तुले रहते हैं जो आठों पहर,
उम्र भर आज वो जीने की दुआ देने लगे।

सादगी देखिये, उनकी ज़रा अल्ला अल्ला,
घर बुला कर वो मुझे घर का पता देने लगे।

हम वफादार "मयंक", उनको जफा की आदत,
जुरम-ए-उल्फत की मुझे आज सजा देने लगे।

याद

पलाश के पत्तो से छन छन कर
आती थी स्वर्णिय धूप
उसकी गर्मी से
छाया में पनप रहे
सूरजमुखी के फूल को
खिला खिला देती है
वैसे ही तुम्हारी यादो की महक
हल्के उन्माद के साथ
मृत प्राय जीवन में
बसी सुप्त मृत आत्मा को
जगा जगा देती है
जिला जिला देती है
तुम चाहो तो कभी भी
मेरे पास नहीं आना
मगर जब फुर्सत हो तो
जरा देर को
याद आ जाना ।

□

तलाश

सृष्टि का प्रारम्भ
नग्नता थी
वायु एवं जल के प्रभाव से
स्वाभाविक ही उसमें मग्नता थी
जिसके लिए किया गया
कलेवर का अविश्कार
रोका जा सके जिससे
भौतिक तन का संहार
मगर ये आदम का ज़ाया
तलाशता रहा नंगेपन को
तलाश जारी है, भूल कर
मानवपन को
कलेवर के नीचे की सच्चाई का
उसको एहसास है, जो उसके पास है
समझ पाता नहीं हूं मैं
फिर क्यों उसको
उसकी तलाश है।

□

ग़ज़ल

रात भर जो गीत उल्फ़त के सनम गाता रहा,
आप से मिलने का वादा उसको तड़पाता रहा ।

किस क़दर तड़पा किया है तेरी फ़ुर्क़त में सनम,
मैं दिले–नादान को हर बार समझाता रहा ।

वादा करके जो न आए, उसका कोई ग़म नहीं,
तेरा वादा याद मुझको बार बार आता रहा ।

जब मिरे अरमा भरे दिल पै गिरी हो बिजलियाँ,
गुलिस्ताने दिल का फिर हर फूल कुम्हलाता रहा ।

छेड़ करके दिल के तारों को "मयंक" उम्मीद से,
प्यार के नगमे हमेशा दिल मिरा गाता रहा ।

□

ग़ज़ल

वो तसव्वुर में आ गए होते,
बनके अरमा पै छा गए होते ।

रश्क अपने नसीब पर करते,
हम अगर उनको भा गए होते ।

गरमिए इश्क और बढ़ जाती,
उनका पहलू जो पा गए होते ।

अपने दीनों जहां संवर जाते,
दिल में मेरे वो आ गए होते ।

हम जहां से "मयंक" टकराते,
वो जो वादा निभा गए होते ।

★

ग़ज़ल

हसीन कितने हैं, उनका शबाब क्या कहिए ।
जो लाजवाब है, उनका जवाब क्या कहिए ।।

नक़ाब रुख़ से उठाया है, इस तरह उसने ।
घटा से निकला जैसे, माहताब क्या कहिए ।।

जो देख ले तो बहक जाए मेरा दावा है ।
वो चश्म उनके हैं, जामे-शराब क्या कहिए ।।

जो देखे देखता रह जाए बस खुदा की कसम ।
वे शोख उम्र में उनका हिजाब क्या कहिये ।।

बहार देख के शरमाए हिना गुलशन में ।
"मयंक" होठ है उनके गुलाब क्या कहिए ।।

ग़ज़ल

हमारी याद जब आए तो खुद को प्यार कर लेना,
कि लेके आइना नज़रों से नजरें चार कर लेना ।

मुकाबिल में तुम्हारे जान-ए-मन हम बैठ जाएँगे,
नज़र के तीर महफ़िल में जरा तैयार कर लेना ।

मजा फिर हुस्न का और इश्क का आऐगा उल्फत में,
कि इकरारे मुहब्बत तुम सरे बाज़ार कर लेना ।

खलिश मीठी जिगर में आपके हो जाएगी पैदा,
मेरा तीरे-नज़र अपने जिगर के पार कर लेना ।

"मयंक" अपना समझते है चले आना कभी तो तुम,
शबे वादा कभी पूरा मेरे दिलदार कर लेना ।

□

ग़ज़ल

हमारे पास में तुम आओगे कभी न कभी,
तड़प के हमको न तड़पाओगे कभी न कभी ।

सियाह रात में मिल जाऐगा हमें रस्ता,
के चांद बन के नज़र आओगे कभी न कभी ।

किसी भी रोज़ ये इज़हारे इश्क होगा ही,
कसम खुदा की के शरमाओगे कभी न कभी ।

सुभ—औ—शाम याद करता हूं,
मेरे ख़यालों पै छा जाओगे कभी न कभी ।

इसी तरह जो रही दोस्ती की चश्मे करम,
"मयंक" जीस्त में छा जाओगें कभी न कभी ।

ग़ज़ल

आपकी हैं जेहन पै परछाईयां सुन लीजिए,
जिन्दगी में बस गई तनहाइयां सुन लीजिए ।

डूबा डूबा दिल मेरा रहता जहां में आजकल,
दरिया जैसी छा गई गहराइयां सुन लीजिये ।

हम तेरे कूचे में आते ही रहेंगे जानेमन,
चाहे होवें प्यार में रुसवाइयां सुन लीजिए ।

आपको पाते है हम अपने तसब्बुर में करीक,
प्यार की दिल में बजी शहनाइयां सुन लीजिए ।

हो गए अपने पराए–ए "मयंक" अब क्या कहे,
जिन्दगी में अब हैं बस नाकामियां सुन लीजिये ।

★

ग़ज़ल

मिलो न तुम तो मेरा दिल उदास रहता है ।
खयाल-ए-यार मेरे आसपास रहता हैं ।।

भरी है जीस्त में ये तलाखियां जमाने की ।
कि दर्द दिल में मेरे ख़ास ख़ास रहता है ।।

उसे जहां की है परवाह न कुफ्र का डर है ।
मरीज़े इश्क सदा बदहवास रहता है ।।

किसे बताएँ कि हम कितना प्यार करते हैं ।
"मयंक" रूह में उनका लिवास रहता है ।।

□

ग़ज़ल

दिल कह रहा है उनसे कोई काम नहीं है ।
लेकिन इसे फिर भी जरा आराम नहीं है ।।

बरबाद हो गए हैं तो उनसे नहीं शिकवा ।
तकदीर पै है, उन पै तो इल्ज़ाम नहीं है ।।

वो शाम भी क्या शाम थी जब साथ साथ थे ।
उस शाम से रंगीन कोई शाम नहीं है ।।

तुम पास रहो, और रहें दूरियां फिर भी ।।
दुनियां में "मयंक" इतना तो बदनाम नहीं है ।

ग़ज़ल

सुर्मई रात है अंधेरा है,
तेरी यादों ने आके घेरा है ।

इस तसव्वुर में खो गया हूं मैं,
हसरते घुंघ है घनेरा है ।

तेरी चाहत में ये भी याद नहीं,
रात के बाद भी सवेरा है ।

तेरे बिन राह और मंजिल क्या,
अब न कोई मेरा बसेरा है ।

ए "मयंक" सुख दुख लगे रहते,
जिन्दगी दो घड़ी का फेरा है ।

★

ग़ज़ल

तमाम रात सितारों ने इन्तज़ार किया।
चमन की मस्त बहारों ने इन्तज़ार किया॥

हमे न पूछने वाला था कोई महफ़िल में।
जो आप थे तो हाज़रों ने इन्तज़ार किया॥

झुकी झुकी सी नज़र क्यूं नहीं उठी आख़िर।
मेरी नज़र के इशारों ने इन्तज़ार किया॥

ये बात और है हम रोशनी को तरसे है।
फ़लक पे चांद सितारों ने इन्तज़ार किया॥

"मयंक" तेरा सहारा नहीं लिया उसने।
हज़ार बार सहारों ने इन्तज़ार किया॥

★

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

मोहब्बत में मिला जो ग़म हमें वो जाँ से प्यारा है।
जिन्हें खुशियाँ नहीं मिलती उन्हें ग़म का सहारा है॥

अजब दस्तूर दुनिया का समझ में कुछ नहीं आता।
ग़मों ने जिनको छोड़ा है उन्हें खुशियों ने मारा है॥

बड़ी लज्ज़त सी पाई है महब्बत प्यार में हमने।
तड़पना प्यार में हो तो हमें वो भी गवारा है॥

अजब दीवानगी सी प्यार में छाई है ऐ यारो।
इधर देखें उधर देखें उन्हीं का ही नज़ारा है॥

जिन आँखों ने पिला दी है महब्बत की हमें मीना।
मयंक अब जिंदगानी में उन आँखों का सहारा है॥

□

ग़ज़ल

ये मेरा दिल है जो पहलू में रह नहीं सकता।
मिलेगा किस जगह ये भी मैं केह नहीं सकता॥

वो मेरी बाहों में आएँ न आएँ उनकी खुशी।
रहे वो गैरों की बाहों में सह नहीं सकता॥

बहुत गुजार दी तुझसे बिछड़ के जाने जहां।
तू आ भी जा के में अब दूर रह नहीं सकता॥

वो मेरे बन के किसी के भी हो नहीं सकते।
जो मेरे हो के रहे ग़ैर, सह नहीं सकता॥

"मयंक" रातों को रोया है बे-वफाई पे।
अब इक अश्क भी आखों से बह नहीं सकता॥

□

ग़ज़ल

परबतों के पेड़ों पर शाम घिर आई है ।
एक मैं हूं और मेरे साथ तनहाई है ।।

क्या हंसी नजारा है और समाँ भी प्यारा है ।
ऐसे में तू आ भी जा, याद तेरी आई है ।।

कैसे बात बन जाए कैसे काम हो जाए ।
मैं जो बे-वफा हूं तो तू भी हरजाई है ।।

जिसको इक नजर देखूँ वो ही मेरा हो जाए ।
ये नसीबों की बातें, किस्मत ऐसी पाई है ।।

एक अदा "मयंक" उनकी होश खो देती है ।
और जान लेवा वो उनकी अंगड़ाई है ।।

★

ग़ज़ल

उन की पहली नज़र का असर देखिये ।
वल वले उठ रहे किस क़दर देखिये ।।

वो नक़ाब उठा कर गिरा दें जरा ।
शाम भी देखिये और सहर देखिये ।।

वो चलाते है कस कस के तीरे नज़र ।
इश्क़ का हो रहा है असर देखिये ।।

संग दिल भी न दिल को बचा पाए हैं ।
देखिये उन की तिरछी नज़र देखिये ।।

वो मयकं आज मेरे ख्यालों में है ।
बढ़ रहा है ये दर्दे जिगर देखिये ।।

ग़ज़ल

धुन शमअ के जलने की सब को
एहसास नहीं जल जाने का ।
इक दर्द न कोई जान सका
इक जलते हुए परवाने का ॥
आप आते हैं तो जान-ए-वफा
हर चीज़ सुहानी लगती है ।
आज आए हो तो बैठो जरा
ये वक्त नहीं है जाने का ॥
मस्ताना निगाहें करती हैं
दीवाना अदाएँ करती हैं ।
ए-काश खबर वो ले लेते
क्या हाल है इस दीवाने का ॥
हम उनके हमारे वो हैं चलो
दुनिया की न कोई बात करो ।
तुम साकी की कोई बात करो
और ज़िक्र करो पैमाने का ॥
अब उनको "मयंक" अपना न कहो
इस दर्द को बस चुपचाप सहो ।
वो राह बता दीजे हम को
जो रस्ता है मय खाने का ॥

ग़ज़ल

वो नज़रे मिला कर क्यूं हम से
तलवार की बातें करते हैं ।
मरने से नहीं वो डरते है
जो प्यार की बाते करते हैं ।।
वो तेज निगाहों के खंजर
इस दिल पे चलाते हैं हरदम ।
वो तीर कमां से खेलें जो
तकरार की बाते करते हैं ।।
हम माने तो कैसे माने इसे
एसा तो कभी होता ही नहीं ।
पांवों में नहीं घूंघरु कोई
झंकार की बातें करते हैं ।।
मैं कैसे उन्हें समझाऊँ भला
वो मजबूरी तो समझें जरा ।
परदे भी है दीवारें भी
दीदार की बातें करते हैं ।।
क्या होगा कुछ कह सकते नहीं
रफ्तारे ज़माना देखो ,,मयंक'' ।
घुटनों के बल चलने वाले
र.फ्तार की बातें करते हैं ।

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

नज़र नवाज़ सितारों में तुम समाए हो ।
चमन की मस्त बहारों में तुम समाए हो ॥

नहीं है मेरा सहारा कोई तुम्हारे सिवा ।
है शुक्रिया के सहारों में तुम समाए हो ॥

तुम्हारा अक्स सितारों में झिल मिलाता है ।
के आसमाँ के सितारों में तुम समाए हो ॥

ये मेरे दिल का सफ़ीना भटक रहा हर सू ।
भंवर में, मैं हूं किनारों में तुम समाए हो ।

मयंक ढूंढता फिरता है हर बशर में तुझे ।
पता चला के हज़ारों में तुम समाए हो ॥

□

ग़ज़ल

मोहब्बत रंजो ग़म का इक सुनहरा साज है यारो,
ये बजता भी यारो, और बे आवाज़ है यारो ।

न जाने किस लिए मंडरा के जल जाते है परवाने,
यकीनन शम्मअ के सीने में कोई राज़ है यारो ।

कोई आशिक से बढ़ कर सुरमा दिखता नहीं हमको,
हरिक आशिक ज़माने में बड़ा जांबाज़ है यारो ।

जो घायल करके रख दे इक नजर में मेरा दावा है,
निराला जान-ए-महबूबी का वो अंदाज है यारो ।

भले सैय्याद ने पर नोच डाले है "मयंक" अपने,
अभी पर जिस्म में कुछ ताकते परवाज़ है यारो ।

□

ग़ज़ल

वो पहलू में मेरे अजाएगे पैग़ाम आया है,
मोहब्बत में नहीं शरमाऐंगे पैग़ाम आया है ।

बहुत तड़पा रहे थे बेरहम सैयाद बन के वो,
मगर अब वो नहीं तड़पाऐंगे पैग़ाम आया है ।

कि जज़्बा ये मुहब्बत का बड़ा मजबूत होता है,
जहां को आज वो बतलाऐंगे पैग़ाम आया है ।

मेरी गजलें मेरे अशआर अब भाने लगे उनको,
सुना है बज्म में वो गाऐंगे पैग़ाम आया है ।

कोई मेरे तसव्वुर में "मयंक" गर आता है तो आ,
खयालों पै मेरे छा जाऐंगे पैग़ाम आया है ।

★

ग़ज़ल

तुमने आंखों के सागर पिलाए
और हमारे कदम लड़खड़ाए

एक दिन उनसे आंखें मिली थी
उम्र भर हमने आँसू बहाए

अपनी आंखों से इतनी पिला दे
उम्र भर न मुझे होंश आए

तुमने फुरकत में आंसू पिए हैं
उनके हमने फसाने बनाए

बेवफा रहके भी खुश रहे तू
ये दुआ के लिए हाथ उठाएँ

पीट दो यूं जगत में ढिढोरा
दिल "मयंक" ना कोई लगाए

●

ग़ज़ल

ज़माने को बता देंगे हमें तो ग़म ने मारा है,
मगर ये भी हक़ीकत है हमें ग़म का सहारा है।

मुक़द्दर से हज़ारों ग़म मेरे हिस्से में आए हैं
निगाहों के इशारों ने मुक़द्दर को संवारा है।

ये चेहरा ख़ूबसूरत चांद का धोका सा लगता है,
घनेरे आपके गेसू घटाओं का इशारा है।

तसव्वुर में चले आए हैं वो इक सुर्ख जोड़े में,
हमारे सामने रंगीन ये दिलकश नज़ारा है।

भटकता फिर रहा है ये "मयंक" आवारा बादल सा,
कि इस पर कुछ तरस खाओ के ये आशिक बेचारा है।

●

ग़ज़ल

करें कैसे बयां यारों कयामत कैसी आई है !
के ज़ालिम ने उठाकर जब नज़र नीचे झुकाई है !!

हमें सावन का वो मौसम सुहाना याद आता है !
कि शाने पे सनम के जुल्फ़ जब भी लहलहाई हैं !!

गुमां होता हैं गुलशन में बहारें आगई जैसे !
तुम्हारी मस्त जुल्फ़ों से महक इक हम को आई हैं !!

खुदा का शुक्र है वो वस्ल की शब हैं खयालो में !
बड़ी मुद्दत में हमने प्यार की सौगात पाई है !!

'मयंक" अब आगये है पुरसिशे एहवाल को मेरी !
कली उम्मीद की मुद्दत में यारो मुस्कुराई हैं !!

●

गज़ल

किसी के प्यार की जब कोई बात होती है
ग़म-ए-हयात की तन्हाई साथ होती है

नक़ाब रुख से उठा दे तो दिन निकलता हैं
नकाब रुख पे गिरा दे तो रात होती है

वो जब कभी भी सिमट आए मेरी बाहों मे
तो मेरे पहलू में सब कायनात होती हैं

ज़मी से चढ़ के वो ही आसमा में उड़ता हैं
कला के दौर में जिसकी बिसात होती हैं

सभी का पाला ग़मों से 'मयंक' पड़ता हैं
किसे ग़मों से जहां में निजात होती है

●

ग़ज़ल

मेरे मय कदे में कदम लड़खड़ाएं ।
अब उनकी है मर्ज़ी संभालें गिराऐ ।।
सुराही भी उनकी है साक़ी भी उनका ।
न जाने पिलाएं के वो न पिलाएं ।।

मेरे साकिया मुझ को इतना बता दे ।।
नज़र से पियें के सुराही उठाएं ।
तुम अपनी निगाहों में मुझ को समाओ ।
मेरे अक्स नज़रों में फिर झिलमिलाएं ।।

नजर से पिलाओं तो ठुकरादूं मय को ।
तो साक़ी भी हालत पे आसूं बहाएं ।।
नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़े न पढ़े वो ।
मगर क़ब्र पे मेरीं इक बार आएं ।।

" मयंक "को पिलाई जो आंखों से तुमने ।
नशा उम्र भर ये उतरने न पाएं ।।

●

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

जमाने की नहीं परवाह करना और आ जाना।
बस इक लम्हे को मेरे पास आना फिर चले जाना ।।

ये हसरत हैं ये अरमां हैं ये ख्वाइश हैं मेरे दिल में।
चले आना हमारी आरजू मे रँग भर जाना ।।

वफ़ा मुमकिन नहीं तो बेवफ़ाई भी नहीं करना ।
मेरे ख्वाबों मे आ जाना ज़रा मुझ पर तरस खाना ।।

नहीं देगे इजाजत ये जहां वाले मुहब्बत की ।
जहां वालों से मत डरना चले आना चले आना ।

बहुत तड़पाया है तुमने, सताया है रिझाया हैं ।
"मयंक" अब सह नहीं सकता न इसको और तड़पाना ।

●

ग़ज़ल

जो किया था तुने पहले वही कर दो फिर इशारा,
तेरी इक नजर की खातिर तेरा हर सितम गवारा ।

न करूं जो खुद कुशी मैं जियूं कैसे जिन्दगी मैं,
गमे आरजू ने छोड़ा गमे जिन्दगी ने मारा ।

मैं तो हो गया हूं उनका, वो न हो सके हमारे,
उन्हें याद कर के रो लूं यही हैं मेरा सहारा ।

मेरा इश्क भी अजब हैं हुआ मुझ पे वो गजब हैं,
कभी हो गये खफा वो कभी प्यार से पुकारा ।

ये "मयंक" फंस गया है किसी रंज के भँवर में,
है भंवर में दिल की कश्ती नहीं दूर तक किनारा ।

●

ग़ज़ल

पहले हमारे प्यार को दिल में बसाईये ।
फिर हाल दिल का जो भी हो हम को सुनाईये ।।

एहसास पहले दिल का समझ लीजिये ज़रा ।
फिर शौक़ से ग़ज़ल ये मेरी गुन-गुनाईये ।।

बदनाम हो न जाएंकहीं इश्क़-ओ-प्यार में ।
महफ़िल में यूं न हमसे निगाहें मिलाईये ।।

वादा रहा के साथ रहेगें तमाम उम्र ।
आग़ोश में हुज़ूर मेरे आ भीं जाईये ।।

सब रंज़-ओ-ग़म को भूल के तुम मेरे होगये ।
महबूब मेरे हंसिये मुझे भी हंसाईये ।।

दिल से 'मयंक" की है,दुआ-जान-ए-शायरी ।
खुद अफ़ताब बन के यूं ही जगमगाईये ।।

●

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

दिल-ए-नादान संभल जाए तो कुछ बात बने !
एक लम्हे को बहल जाए तो कुछ बात बने !!

अपने किरदार को वहशत में बदल डालूगा !
मेरी हालत से दहल जाए तो कुछ बात बने !!

रस्मे-उलफत तो ज़माने में नहीं चलती है !
ये इरादा जो बदल जाए तो कुछ बात बने !!

काश वो मेरी क़फ़ाओं पे यकीं ले आएं !
उनका अरमान मचल जाए तो कुछ बात बने !!

ग़र वो चहरे से " मयंक " आंज हटालें जुल्फ़े !
चांद बदली से निकल जाए तो कुछ बात बने !!

●

ग़ज़ल

आज महिफ़ल में तेरी मुझको बुलाना होगा !
नाज अन्दाज़ मेरे यार उठाना होगा !!

मेरे गीतों को पसन्द आज करो या न करो !
मेरी ग़जलों को तरन्नुम से ही गाना होगा !!

इसमें रुसवाई की परवाह न ज़माने का है डर !
तुमने जो वादा किया हैं वो निभाना होगा !!

साथ थे, साथ हैं और साथ चलेंगे हरदम !
इश्क की राह में क़दमों को बढ़ाना होगा !

कोई नजरों से इशारे मुझे करता हैं "मयंक"
आज उनके लिये इक गीत सुनाना होगा !!

●

ग़ज़ल

तुमने छेड़ा है, मेरे दिल का साज़,
तिरछी नज़रों का खूब है, अन्दाज़ ।

आपने प्यार से, जो दी आवाज़,
बज उठा आज मेरे, दिल का साज़ ।

आईने से मिले है आईना ,
आईने की तरह तेरी आवाज़ ;

हम तुम्हारे हैं तुम हमारे हो,
आंखों-आँखों में ही रहे ये राज़ ;

आँज उनको मयंक अपना लो,
पर नहीं, फिर भी तुम करो परवाज़ ।

●

ग़ज़ल

तुम्हारी राहों में नज़रें बिछाए बैठे हैं !
जुनूं की हद है के खुद को भूलाए बैठे हैं !!

तुम्हारी राह के पत्थर जलाएं पांव मेरे !
तपिश थी इतनी के खुद को जलाए बैठे है !!

अजब निगाहों से देखा है मुझको महफ़िल में !
नज़र मिला के मेरा दिल चुराए बैठे है !!

जफ़ा की तो है, वफ़ा की नहीं मुझे उम्मीद !
वफ़ा-ए-शौक़ तेरा आज़माए बैठे है !!

हमें जहां के ग़मों से नहीं ज़रा फ़ुर्सत !
हमारे दिल को वो दिल से लगाए बैठे है !!

" मयंक " ढुंढते फिरते वफ़ा नहीं मिलती !
फ़रेब सैकड़ों उल्फ़त में खाए बैठे है !!

●

ग़ज़ल

यूं न रह रह के हमे तड़पाईये
कैसे भूले, आप ही समझाइये

तुम हमें याद आओ ना जिस रास्ते
हमको ऐसा रास्ता बतलाइये

डर ज़माने का अगर हैं, इस कदर
ख्वाब मे ही जानेमन आजाइये

दूर रहकर अब जिया जाता नहीं
आइये आगोश मे आ जाइये

दूर कीजे दिन की बेचैनी "मयंक"
हमसे कितना प्यार है बतलाइये

●

ग़ज़ल

तुम्हारी याद से दुनिया-ए-दिल आबाद करते हैं ।
के अपने दिल को बहलाते हैं तुम को याद करते हैं ।।

तुम्हारे तज़किरें उनवान बन के आये ग़ज़लों में ।
हर इक अश्आर के अलफ़ाज़ तुम-को याद करते हैं ।

जहां के लोग बरबादी का हम को डर दिखाते हैं ।
तुम्हारी याद से अपना जहाँ आबाद करते हैं ।।

नहीं होती है इज़हारे मोहब्बत की कभी हिम्मत ।
ख्यालों में हम दिल रुबा फरयाद करते हैं ।।

शबे फ़ुर्क़त में 'मयंक" पर जो सितम आप करते हैं ।
ये देखा है सितम पे ही सितम सय्याद करते हैं ।।

●

ग़ज़ल

चलो ये मान लिया सबको प्यार होता हैं !
मगर नसीब से दीदार – ए – यार होता हैं !!

बनी के साथ हैं बिगड़ी के साथ कोई नहीं !
नसीब से ही कोई ग़म गुसार होता है !!

मुझे पता नहीं कुछ दोस्तों का कहना है !
मेरी इन आंखों में तेरा खुमार होता है !!

निगाह मिलने को मिलती है बारहा लेकिन !
ये इश्क़ है जो फकत "एकबार" होता है !!

क़सम खुद की अचानक जो दिल पे चल जाए !
"मयंक" तीर वो ही दिल के पार होता है !!

●

ग़ज़ल

प्यार की राहों में मेरे साथ चल
ए मेरी जाने वफा जाने ग़ज़ल

फूल सा चेहरा तेरा ऐसा हंसी
झील में हँसता हुआ जैसे कंवल

तू कहे तो वक़्त का रुख मोड़ दूं
तेरी पेशानी पे क्यों आए हे बल

सौ बरस की ज़िन्दगी बेकार है
कीमती है प्यार का बस एक पल

ए "मयक" वो आ रहे है सामने
क़्यों बहकता है तू ए नादाँ सम्भल

ग़ज़ल

●

अपनी धुन का मारा हूं मैं तो इक बंजारा हूं
अपनी मंज़िल का राही हूं मैं आशिक आवारा हूं

राग की धुन को क्या कोई जाने सोज़ ए दिल कोई क्या पहचाने
मैं तो तरन्नुम का नगमा हूं मैं खुद ही इक तारा हूं

मुझको बांध सका न कोई रस्मों की ज़ंजीरों में
एक हवा का झोंका हूं मैं चंचल शोख इशारा हूं

पर्वत मुझको राह दिखाते और अक्सर थम कर रह जाते
एक भटकता जोगी हूं और नदियां की धारा हूं

काश "मयंक" को पहचाने तू इसकी मुहब्बत को जाने तू
इक सपना हूं इक हूं, हकीकत मैं एहसास तुम्हारा हूं

●

ग़ज़ल

वो आफताब निकला सितारे चले गये !
तुम जो मिले तो ग़म के नजारे चले गये !!

रह-रह के तीर नज़रों के हम पे चले मगर !
हम फिर भी अपने दिल में उतारे चले गये !!

वो हम को भूल कर भी न आवाज़ दे सके !
हम थे के फिर भी उनको पुकारे चले गये !!

मुश्किल था हम से गुजरेंगें तेरे बगैर दिन !
फिर भी तेरे बग़ैर गुजारे चले गये !!

वो रुठ गये हैं तो " मयंक " उनसे क्या कहें !
वो क्या गये के दिल के सहारे चले गये !!

●

ग़ज़ल

तुम न नजरों की गर करो आशा ।
कैसे समझोगे प्यार की भाषा ॥

सिर्फ अगड़ाई ले के भूल गये ।
समझो सपनों की कुछ परिभाषा ॥

कमसिनी का ज़माना बीत गया, ।
अब मुहब्बत की कुछ पढ़ो भाषा ॥

इक नज़र प्यार की इधर भी हो ।
हमने तुमसे लगाई हैं आशा ॥

भोलेपन से "मयंक" कहते हैं ।
मैं न तोला हूं और न हूं माशा ॥

●

ग़ज़ल

●

तुम्हारे प्यार को दिल से लगाए बैठे हैं
किसे बताएँ कि हम चोट खाए बैठे हैं

कुसूर कर लिया चेहरे पे सादगी फिर भी
नज़र नज़र में मेरा दिल चुराए बैठे हैं

समझ में कुछ नहीं आता जवाब क्या होगा
सवाल बनके वो दिल में समाए बैठे हैं

उन्हें ज़रा भी मुहब्बत का अपनी पास नहीं
हम उनके सामने हस्ती मिटाए बैठे हैं

'मयंक' आना हैं उनको ज़रूर आएगें
चराग़ उमीदों के कब से जलाए बैठे हैं

●

ग़ज़ल

ग़म मिले है तो उन्हें आज छिपाना होगा !
ग़म की दुनियाँ में हमे लौट के आना होगा !!

मेरे इज़हारे मोहब्बत पे हुई रुसवाई !
अब ये अफसाना किसी को न सुनाना होगा !!

भूल जाँऊ तुझे मुमकिन ही नहीं फिर भी सनम !
तेरा एहसास भी अब दिल में न लाना होगा !!

अब ये सोचा हैं तेरा जिक्र कहीं भी आए !
दिल ये तड़फेगा तो मुंह फेर के जाना होगा !!

हमफना होने तलक जलते रहेंगे यूँ ही !
इश्क की राह में यूं जलते ही जाना होगा !!

जब कभी होंगे वो हम राहे रकीबां यारो !
दिल का खूँ करके उन्हें यू भी निभाना होगा !!

मेरी मय्यत पे वो आए कभी चाहा ही नहीं !
इसका ग़म हे के उन्हें अश्क बहाना होगा !!

ए "मयक" आज चलो छोड़ दें महफिल उनकी !
भूल पाएगें नहीं फिर भी भुलाना होगा !!

●

तेरी मस्त आँखों में कौन ये समाया है ।
मुझ को तो लगता है जैसा मेरा ही साया है ।

ये यक़ीं नहीं आता, तुम मुझे भूलाओगे ।
याद मेरी दिल में यों, उम्र भर न लाओगे ।
रात दिन इन-आँखों में, आप ही का साया है ।
तेरी मस्त आँखों में, कौन ये समाया है ।

सनम बसा लीजिये, हम को इन निगाहों में ।
मुस्कुरा के आजाओं, आज मेरी बाहों में ।
जैसा मैंने सोचा था वैसा तुमको पाया है ।
तेरी मस्त आँखों में कौन ये समाया है ।

एक दिन समझ लोगे, मेरी इस मुहब्बत को ।
दिल से भी लगालोगे आप मेरी चाहत को ।
है यक़ीं "मयंक" को-तो-गीत ये सुनाया है ।
तेरी मस्त आंखों में कौन, ये समाया है !

●

ग़ज़ल

मेरे पास आओ निगाहें मिलाओ,
निगाहों से दिल में मेरे बैठ जाओ।

मेरे दिल की हालत सुनो न सुनो तुम,
जरा अपने दिल की मुझे कुछ सुनाओ।

ये खामोश आँखों में आँसू के क़तरे,
रुलाया है किसने बताओ-बताओ।

ज़मी से फ़लक तक तुम्हें ढूढ़ता हूँ,
कहीं तो झलक अपनी मुझको दिखाओ।

न चाहो हमें ये है मर्ज़ी तुम्हारी,
तो इनकार ही अपने लब तक तो लाओ।

बहुत तुमने रोका, हमीं रुक न पाए,
मगर अब करें क्या तुम्हीं कुछ बताओ।

ये उम्मीद तुमसे लगाए हुए हैं,
मोहब्बत में कदमों को आगे बढ़ाओ।

न रास आई चाहत 'मयंक' किसी की,
जलो शम्म की तरह जलते ही जाओ।

●

गजल

कुछ रिश्ते दुखः के होते हैं, जिनसे आराम नहीं होता ।
कुछ रिश्ते बस नाम के होते, कुछ का नाम नहीं होता ।।

ये दस्तूर जहां का यारों अच्छों को कहते हैं, बुरा ।
जिसको ज़माना न पहचाने, वो बदनाम नहीं होता ।।

जिसको नाम है ऊँचा करना वो गुमनाम है दुनियां में ।
जिसको नाम नहीं करना है, वो गुमनाम नहीं होता ।।

काहिल सुस्त नहीं कुछ करते, दुनिया में दुखः सहते हैं ।
कोशिश की जिसने दुनिया में, वो नाकाम नहीं होता ।।

अंधियारे में धाम न होते, लोग अपना विश्वास है खोते ।
जिस जा "मयंक" नहीं पहोचा हो वो कोई धाम नहीं होता ।।

●

गज़ल

तुम्हारी राह में सिजदा किया बहारों ने ।
बहाए अश्क तेरी राह में सितारों ने ।।

नहीं कोई मेरा तेरे सिवा ज़माने ने ।
कि साथ छोड़ दिया मेरा ग़म गुसारों ने ।।

किनारे पास न आए, नदी की कल कल में ।
कि जुस्तजू में दिया तोड़ दम किनारों ने ।

'मयंक' प्यार करो तो भली ये बात नहीं ।
उठाई आज ये आवाज़ ग़म के मारों ने ।।

●

ग़ज़ल

जो हमने दास्तानें ग़म सुनाया, आप मुस्काए ।
जो हमने आंसूओं का गीत गाया, आप मुस्काए ।।

तुम्हीं ने मुझको उल्फत के दिये थे, ग़म सजाने को ।
ग़मों का बोझ हमने जब उठाया, आप मुस्काए ।।

ये दिल की देखकर हालत, जहां वाले बहल उठ़े ।
जुनूं की हाल हमने जब दिखाया आप मुस्काए ।।

नहीं संगीत कोई गीत कोई, दिल को बहलाता ।
ग़मों का गीत हमने गुन गुनाया, आप मुस्काए ।।

चलो अच्छा हुआ, खुश होगए तुम मेरे मरने पर ।
ज़माने ने जनाजा जब उठाया आप मुस्काए ।।

गजल

तुम्हारी याद में, खुद को भुलाए बैठा हूं ।
चले भी आओ, मैं खुद को गिटाएं बैठा हूं ।।

कि मेरे प्यार के बदले में दोगे प्यार मुझे ।
उम्मीद ऐसी में, तुमसे लगाए बैठा हूं ।।

जो ग़म दिये थे कभी, वो भी है क़बूल मुझे ।
बहार करके मैं, उनको सजाए बैठा हूं ।।

जो आओ राह में, तेरी मैं रोशनी कर दूं ।
चराग़ नज़रों के कब से जलाए बैठा हूं ।।

'मयंक' आप सधाई हमें जो दें, भी तो क्या ।
वफाएं आपकी सब, आजमाए बैठा हूं ।।

गज़ल

तमाम रात बहारों ने इन्तजार किया ।
फलक में चाँद-सितारों ने, इन्तजार किया ।।

वो नाउम्मीदियां, मुझसे अलग न हो पाई ।
गमों की सर्द कतारों ने इन्तजार किया ।।

जो तुम न साथ रहे, तो सहारा ग़म ने दिया ।
कि मेरे साथ सहारों ने इन्तजार किया ।।

न डोली सज सकी, सिन्दूर भी न भर पाए ।
तमाम उम्र कहारों ने, इन्तज़ार किया ।।

न आए वो, तो रहा इन्तज़ार महफिल में ।
हमारे साथ हजारों ने, ईन्तज़ार किया ।।

तमाम रात गुज़ारी है, लहरें गिन गिन कर ।
'मयंक' दरिया की धारों ने इन्तज़ार किया ।।

●

गज़ल

आए जो चित्त को सहारा हो गया ।
एक दिलकश सा नजारा हो गया ।।

हम किसी के हो गए हैं दोस्तों ।
कोई दुनिया में हमारा हो गया ।।

माज तक खुशियों के हम थे मुन्तजिर ।
आज तो गम भी गवारा हो गया ।।

ऐसोगाह में दिन कटा करते मे ।
आज गर्दिश में गुजारा हो गया ।।

शुक्रिया तुम आज मेरे हो गए ।
मैं 'मयंक' भी तो, तुम्हारा हो गया ।।

●

गज़ल

हमे भूल कर तुम दिखाओ तो जाने ।
न दिल में कभी याद आओ तो जाने ।।

मोहब्बत की राहों में रहबर बने थे ।
क़दम के निशा वो मिटाओ तो जाने ।।

गिराओ हमें तो जहां से गिरादो ।
नज़रों से अपनी गिराओ तो जाने ।।

मोहब्बत का मोती इन आँखों में हूं में ।
के आंसू समझ कर बहाओ तो जाने ।।

बला की है मय, मस्त आंखों में तेरी ।
इन आँखों से हम को पिलाओ तो जाने ।।

बसाया मयंक को है दिल में जो अपने ।
वे ऐहसास हम को दिलाओ तो जाने ।।

●

गज़ल

जब कभी हम उन्हें भुलाते हैं ।
याद क्यों बार बार आते हैं ।
मेरे हो जाए ये नसीब कहां ।
सदमे उनके ये हम उठाते हैं ।।

हम खुशी की तरफ जो जाते है ।
ग़म के साये क्यों उभर के आते हैं ।।

जब सहारा लिया कभी मयका ।
जाम में अक्स उन का पाते हैं ।।

उन को अपना कहू तो रूसाईई ।
भूलता हूं तो याद आते हैं ।।

उन से पूछो के मस्त नज़रों से ।
क्यों वो "मयंक" को लुभाते हैं ।।

●

गज़ल

दिल में जब उनकी याद आती है ।
आंखों–आंखों में रात जाती है ।।

चांद अपनी डगर पे जाता है ।
चांदनी दिल मेरा जलाती है ।।

यूं सितारों की मर मरी शब में ।
उमीदे यार झिल मिलाती है ।।

ए हवाओ मुझे बता दो जरा ।
राठ जो उनके घर को जाती है ।।

चलते रहना है मुझ को ए 'मयंक" ।
राठ मंजिल को जो भी जाती है ।।

●

कुछ गीत अनाम के नाम

ग़ज़ल

हमारा दिल कभी तो तेरे ग़म से शाद होता है।
मगर ऐसा भी होता है कभी नाशाद होता है ॥

अगर मिल जाए दिलबर गुल महक जाते है गुलशनमें।
नही मिलता है वो तो आशियां बरबाद होता है ॥

महोब्बत प्यार करना ठीक है लेकिन ये डर भी है।
अगर नाकाम हो तो आदमी बरबाद होता है ॥

बड़े ही शौक से पिंजडे में पंछी पाल लेते हैं।
मगर देखा है ये के बे-रहम सय्याद होता है ॥

बहुत इसरार करता है कोई सुन ने का जब हम से।
"मयकं,, अपनी जुबां से फिर कहीं इरशाद होता हैं ॥

□

ग़ज़ल

:१:

आए वो दिल को सहारा हो गया ।
एक दिलकश सा नज़ारा हो गया ॥

:२:

हम किसी के हो गए हैं दोस्तों ।
कोई दुनिया में हमारा गया ॥

:३:

आज तक खुशियों के हम थे मुन्तज़िर ।
आज तो ग़म भी गवारा हो गया ॥

:४:

ऐशोमाह में दिन कटा करते न थे ।
आज गर्दिश में गुज़ारा हो गया ॥

:५:

शुक्रिया तुम आज मेरे हो गए ।
ये, मयंक, भी तो, तुम्हारा हो गया ॥

ग़ज़ल

जब मौसमे बहार था कुछ याद कीजिए,
जब तुमको हमसे प्यार था कुछ याद कीजिए ।

आंखों के जाम तुमने पिलाए हमें सनम,
क्या मस्त वो खुमार था कुछ याद कीजिए ।

देखे बग़ैर चैन नही था तुम्हें हमें,
और प्यार बेशुमार था कुछ याद कीजिए ।

नजरों का एक तीर चलाया था आपने,
वो तीर दिल के पार था कुछ याद कीजिए ।

इश्को वफा में जान की बाज़ी लगाएंगे,
दोनों को ऐतबार था कुछ याद कीजिए ।

आंखों में रात कैसे गुज़ारी थी ऐ "मयंक",
कैसा वो इंतजार था कुछ याद कीजिए ।

ग़ज़ल

करम की एक नज़र कुछ हुज़ूर तुम करना,
न अपने हुस्न पै इतना ग़रूर तुम करना ।

हम आप पर ये लुटा देंगे जान तक अपनी,
यकीन प्यार पै मेरे ज़रूर तुम करना ।

तेरी निगाहों में मैंने सुरूर देखा है,
मेरी निगाहों में पैदा सुरूर तुम करना ।

तुम्हारे चाहने वालों में हम भी हैं दिलवर,
न दिल से चाहने वाले को दूर तुम करना ।

जहां ये कहता है इसमें नहीं है नूर जरा,
'मयंक' पर भी जरा अपना नूर तुम करना ।

□

ग़ज़ल

मोहब्बत रंजो ग़म का इक सुनहरा साज है यारो,
ये बजता भी यारो, और बे आवाज़ है यारो !

न जाने किस लिए मंडरा के जल जाते है परवाने,
यकीनन शम्मअ के सीने में कोई राज़ है यारो ।

कोई आशिक से बढ़ कर सुरमा दिखता नहीं हमको,
हरिक आशिक ज़माने में बड़ा जाबाज़ है यारो ।

जो घायल करके रख दे इक नजर में मेरा दावा है,
निराला जान-ए-महबूबी का वो अंदाज है यारो ।

भले सैय्याद ने पर नोच डाले है "मयंक" अपने,
अभी पर जिस्म में कुछ ताकते परवाज़ है यारो ।

ग़ज़ल

हंसीन चांद नहीं और आफताव नहीं,
तू ला जवाब है, तेरा कोई जवाब नहीं ।

जो एक बार पीये तो नशा नहीं उतरे,
जो तिरी आंखों में है वो कही शराब नहीं ।

तुम्हारा जिस्म है ऐसा कि जैसे ताज महल,
तुम्हारे जैसा जहाँ में कोई शबाब नहीं ।

शबाब हुस्न अदा, जुल्फ सुरमई आंखे,
हैं इतनी खूबीयाँ जिनका कोई हिसाब नहीं ।

वो देख कर नहीं देखें कमाल ही कहिए,
मयंक ऐसा जहां में कोई हिजाब नहीं ।

★

ग़ज़ल

किए है किस कदर हम पै सितम वो भूल जाते हैं,
ज़ुबां से कुछ नहीं कहते हैं हम वो भूल जाते हैं।

बड़े ही संग दिल हैं, वो निगाहें फेर लेते हैं,
कभी हम पर भी करते थे करम वो भूल जाते है।

सुना है कि मोहब्बत से उन्हें नफरत सी है यारो,
मुहब्बत था कभी उनका धरम वो भूल जाते है।

वफा करते नहीं और बेवफा कहते हैं वो हमको,
हज़ारों बार रक्खा ये भरम वो भूल जाते हैं।

मुहब्बत करने वालों का 'मयंक' अपना धरम देखा,
कहां का दैर और कैसा हरम वो भूल जाते है।

★

ग़ज़ल

करम की एक नज़र कुछ हुज़ूर तुम करना,
न अपने हुस्न पै इतना ग़रूर तुम करना ।

हम आप पर ये लुटा देंगे जान तक अपनी,
यकीन प्यार पै मेरे ज़रूर तुम करना ।

तेरी निगाहों में मैंने सुहर देखा है,
मेरी निगाहों में पैदा सुहर तुम करना ।

तुम्हारे चाहने वालों में हम भी हैं दिलवर,
न दिल से चाहने वाले को दूर तुम करना ।

जहां ये कहता है इसमें नहीं है नूर जरा,
'मयंक' पर भी जरा अपना नूर तुम करना ।

□

ग़ज़ल

तुम्हारे ग़म न ज़माने को हम सुनाऐंगे।
सहेंगे ग़म सभी होठों से मुस्कुरायेंगे ।।

चली भी आ तू ज़रा झिल मिलाती रातों में।
के तेरी राह में दिल अपना हम जलाऐंगे ।।

वफ़ा परस्त को मिलती है एक दिन मंज़िल।
वफ़ा की राह में आगे क़दम बढ़ाएगें ।।

नज़र झुकाएगें दीदार-ए-यार कर लेंगे।
जिगर में आप की तस्वीर हम बसाऐंगे ।।

हमारे बाद भी दुनियां न हम को भूलेगी।
"मयकं" इश्क़ में कुछ नाम कर के जाएगें ।।

□

ग़ज़ल

चले आओ चले आओ हंसी ये रात जाती है ।
तेरे इक चाहने वाले की दिलवर बात जाती हैं ।।

कहीं ऐसा न हो के हम तड़पते ही रहें शब भर ।
फलक पर चांद तारों की हंसी बारात जाती है ।।

हुआ है ये कि हो जाऐं मूरादें दिल की सब पूरी ।
हंसी इस रंग की और नूर सोग़ात जाती है ।।

तुम्हारे बिन हमारी जिंदगी गरदिश सी लगती है ।
चले आते हो तूम तो गरदिशे हालात जाती है ।।

न आए वो मयकं अपना जो कहते थे जमाने से ।
गये सावन के बादल और ये बरसात जाती है ।।

★

ग़ज़ल

वो मुझे याद कर रहे होगें ।
दिल के अरमाँ मचल रहे होगें ॥

नींद आंखों से उड़ गई होगी ।
करवटें वो बदल रहे होगें ॥

रात वो जाग कर गुजारेगें ।
चांदनी में टहल रहे होगें ॥

खुद ही दिल में मचल रहे होगें ।
और खुद ही बहल रहे होगें ॥

कभी वो होश खो रहे होगें ।
और कभी फिर संभल रहे होगें ॥

देंगे दामन की ए मयंक हवा ।
जख्म अब उनके जल रहे होगे ॥

★

ग़ज़ल

अपनी चाहत का आसरा दे दो ।
आपने दामन की कुछ हवा दे दो ।।

जान-ए-मन कुछ करो मसीहाई ।
दिल-ए-बीमार को दवा दे दो ।।

तुम मुझे एक बार मिल जाओ ।
चाहे फिर मौत की दुआ दे दो ।।

तुम से कब हैं वफ़ा की उम्मीदें ।
कुछ वफ़ाओं का तो सिला दे दो ।।

इम्तेहां लो "मयंक" का पहले ।
शौक़ से फिर कोई सज़ा दे दो ।।

(मांझी गीत)

ओ माँझी चल ओ माँझी चल ।
दरिया की धारों की तरह बहता चल प्रतिपल ।।

नहीं छांव है, दूर गांव में, रुकना तेरा नहीं काम है ।
साज़ बना ले तू दरिया की आवाजें कल कल ।।
ओ मांझी चल ओ मांझी चल ।।।

दूर सितारा बन के सहारा तुझे बताए दूर किनारा ।
आता है तूफान मचाता लहरों में हलचल ।।
ओ मांझी चल ओ मांझी चल ।।।

सागर गहरा गहन अंधेरा, कश्ती छोटी दूर सवेरा ।
हिम्मत नहीं हारना साथी श्रम करना हर पल ।।
ओ माँझी चल ओ मांझी चल ।।।

ग़ज़ल

जो हारे इश्क में वो प्यार की इक जीत होती है ।
पुरानी तो यही हमदम जहां की रीत होती है ।।

अमर संगीत जादू हैं ग़ज़ल भी तो करिश्मा है ।
ग़जल दिल से जो निकले वो सुनो संगीत होती है ।।

मुहब्बत में कोई वादा करे वादे पे न आए ।
बड़ी तकलीफ़ फिर दिल को मेरे मनमीत होती है ।।

वो वादे पे नहीं आए तो आखिर क्या मिला हमको ।
"मयंक" आता है वो जिसको किसी से प्रीत होती है ।।

★

नज़्म

न तुम साथ मेरे तो क्या चांद तारे।
ये वीरां जहां में किसे हम पुकारे ॥

हवाएं चलें मस्त होकर फ़िज़ा में।
मगर दिल हमारा तड़पता खिज़ा में ॥

तड़पते रहे सब मुहब्बत के मारे।
न तुम साथ मेरे.....

न तुम गर मिलोगे तो आंसू बहेगें।
तेरी याद में ग़म जहां के सहेगे ॥

ये आँसू बने जिदंगी के सहारे।
न तुम साथ मेरे तो क्या चांद तारे ॥

न शिकवा न कोई शिकायत गिला है।
चमन भी लुटा है नहीं कुछ मिला है ॥

अरे बाग़बा सो रह तू कहां रे।
न तुम साथ मेरे तो क्या चांद तारे ॥

ज़माने ने दिल तोड़ कर रखा दिया है।
चलो जो किया है वो अच्छा किया है ॥

जियेगे "मयंक" अब ग़मों के सहोरे
न तुम साथ मेरे तो क्या चांद तारे ॥

●

नज़्म

ज़माने में मैंने बहुत दु:ख उठाए।
मुहब्बत के साये नहीं पास आए।।

हमारे हो तुम ये कहा भी न जाता।
मगर बिन कहे तो रहा भी न जाता।।

करु क्या के दिल में मेरे तुम समाए।
मुहब्बत के साये............

ख़ता क्या हुई मुझ से इतना बतादो।
न मिलने की मजबूरियां हीं सुनादो।।

के वादे पे क्यूं आप हमदम न आए।
मुहब्बत के साये............

ज़माना करेगा मुहब्बत की बाते।
हम आंखो ही आंखो में काटेगें राते।।

मुहब्बत ने तोबा ये क्या दिन दिखाए।
मुहब्बत के साये............

मयंक अपनी आदत से लाचार हो कर।
भटकता रहा उनका बीमार होकर।।

मगर वो न ज़ख्मो पे मरहम लगाए।
मुहब्बत के साये नहीं पास आए।।

●

नज़्म

हुस्न तेरा शबाब का आलम ।
मस्त आंखे शराब का आलम ।।

फूल सा चेहरा जैसे कोई कंवल ।
और ये जिस्म जैसे ताज महल ।।

प्यारा प्यारा जनाब का आलम ।
हुस्न तेरा.....

तिरछी नज़रो मे प्यार की है अदा ।
नर्म होटों पे दास्ताने वफ़ा ।।

इश्क की एक किताब का आलम ।
हुस्न तेरा.....

हवाएं जुल्फ से तेरी खेले ।
नीची नज़रे न जान ले ले ।।

कितना प्यारा हिजाब का आलम ।
हुस्न तेरा.....

तेरी आँखो में कोई बिजली है ।
हुस्न की तेरे धूप निकली है ।।

है मयंक आफताब का आलम ।
हुस्न तेरा.....

●

नज़्म

तुम अपनी नफरत देदो मुझे ।
मैं उसके सहारे जी लूंगा ।।

है प्यार अगर औरों के लिये ।
मैं हंसते हुए लब सी लूंगा ।।

सुख और खुशी का क्या करना ।
वो चन्द दिनो की होती है ।।

इक चीज़ मोहब्बत है यारों ।
जो अपने आप में मोती है ।।

ग़म प्यार में मुझको मिल जाए ।
मैं जाम समझ के पी लूंगा ।।

तुम अपनी... .....

ये दुनिया वाले ज़ालिम हैं ।
दिल वालो को तड़पाते हैं ।।

और दिल वाले दिल वाले हैं ।
वो इनसे कब घबराते हैं ।।

ये दुनिया चाहे कुछ भी करे ।
मैं नाम ए मोहब्बत ही लूंगा ।।

तुम अपनो.....

की हमने वफा मगर ।
हमको तो वफ़ा ना रास आई ।।

एक चीज़ मोहब्बत माँगी थी ।
वो भी तो उन्होने ठुकराई ।।

आंसू भी आये हिस्से में ।
मैं हंसते हंसते पी लूंगा ।।

तूम अपनी नफरत देदो मुझे ।
मैं उसके सहारे जी लूंगा ।।

नज़्म

माहताब लगती हो आफताब लगती हो ।
क्या जवाब दे कोई ला जवाब लगती हो ।।

ये खिला खिला चेहरा इक कंवल सा लगता है ।
आलम-ए-शबाब तेरा इक ग़ज़ल सा लगता है ।।

जिस में सब हक़ीक़त हो तुम वो रुबाब लगती हो ।
माहताब लगती हो···· ···· ···· ····

देख लेने से तुम को ताज़गी सी लगती है ।
और सारे आलम मे खुशबू सी महकती है ।।

जो खिला हो गुलशन में गुलाब लगती हो ।
माहताब लगती हो···· ···· ···· ····

मस्त मस्त आँखो में झील सी हैं गहराई ।
रुबरु जैसे शायर की काफ़िया पैमाई ।।

मस्त दिल को जो कर दे वो शराब लगती हो ।
माहतब लगती हो···· ···· ···· ····

ये मयंक का कहना दिल में मेरे ही रहना ।
खूब इस में जमते हो सुर्ख जोड़ा जो पहना ।।

हुस्न तुम ही लगते हो ओर शबाब लगती हो ।
माहताब लगती हो आफ़ताब लगती हो ।।

●

नज़्म

तेरे लबो की ही जुम्बिस का इन्तजार मुझे ।
कसम प्यार की है इन लबो से प्यार मुझे ॥

झुकी झुकी सी नज़र जान मेरी ले लेगी ॥
हे दूर फिर भी मगर जान मेरी ले लेगी ।

निगाह मुझ पे उठेगी है एतबार मुझे ।
कसम है प्यार की इन लबो से प्यार मुझे ॥

निगाह यार का अंदाज कुछ निराला हैं ।
के दिल की दुनियाँ में इन से ही तो उजाला है ॥

तुम इस तरह से देखो के हो करार मुझे ।
कसम हे प्यार की इन लबो से प्यार मुझे ।

तुम्हारे लब हैं या लिपटी हुई है दो कलियां ॥
शराब के हैं ये प्याले ये आपकी अखियां ॥

कभी कहो के हैं मयंक तुम से प्यार मुझे ।
कसम है प्यार की इन लबो से प्यार मुझे ॥

●

नज़्म

चांदनी चांद के संग जाए तो होती है ग़ज़ल ।
दूर चंदा से जो हो जाए तो होती है ग़ज़ल ।।

मेघ बरसे तो ये बिजली सी चमक जाती है ।
हवा, पुर्वाई मेरे जिस्म को जलाती है ।।

उनके न आने पे आंखो को भिगोती है ग़ज़ल ।
चादंनीं चांद के संग जाए तो होती है ग़ज़ल ।।

आज दीवानगी-ए-दिल का ये आलम देखो ।
शहीद-ए-नाज पे रोती हुई शबनमदे खो ।।

ज़ूनूं में देखिये होश अपने ही खोती है ग़ज़ल ।
चांदनी चांद के संग जाए तो होती है ग़ज़ल ।।

उनकी यादें मेरी चांदी है मेरा सोना है ।
ये तमन्ना हैं मिलन उन से मेरा होना है ।।

वफ़ा के मोती मुहब्बत में पिरोती है ग़ज़ल ।
चांदनी चाँद के संग जाए तो होती हैं ग़ज़ल ।।

जो मुहब्बत में न इज़हार करोगे हमदम ।
और न प्यार का इसरार करोगे हमदम ।।

यूं बजू आपना मयंक खुद ही तो खोती है ग़ज़ल ।
चांदनी चांद के संग जाए तो होती है ग़ज़ल ।।

●

कव्वाली

(नायक)....तुमने आँखो के सागर पिलाए हमें ।
ये कदम लड़ खड़ाए तो हम क्या करें ।।
हम जो गलियों में दीवाना वार आ गये ।
लोग पत्थर उठाएं तो हम क्या करें ।।

नायिका....हमने आंखो के सागर पिलाए तुम्हें ।
ताब अगर तुम न लाए तो हम क्या करें ।।
इन गलियों में कलियां ही कलियां खिली ।
इनको पत्थर बताए तो हम क्या करें ।।

नायक .... हुस्न वाले अदाओं से चलते रहे ।
देखने वाले हाथ अपने मलते रहे ।।
सोच-ए-इश्क में ऐसे ढलते रहे ।
शमा पे जैसे परवाने जलते रहे ।।
हमने सीखा है दामन बचाना मगर ।
सामने फिर भी आएं तो हम क्या करें ।।
तुमने.....

नायिका....हमको इल्जाम देते हो क्यूं इस कदर ।
हम पे दीवानगी का न कोई असर ।।
तुम लुटाते फिरो अपना दिल और जिगर ।
मय कशी में रहो महकदा हीं है घर ।।
लोग दीवाना कह कर पुकारे इन्हें ।
पी के गलियों में आएं तो हम क्या करें ।।
हमने.....

नायक .... हुस्न वाले वफादार होते नहीं ।
इश्क वालों की खातिर ये रोते नहीं ।।
आंख मतलब बिना ये भिगोते नहीं ।
वार करने का भी मौका खोते नहीं ।।
मतलबी हुश्न वालो से बचते हैं हम ।
मुस्करा कर ये आएं तो हम क्या करें ।।

तुमने.....

नायिका.....हम नहीं जो वफादार तुम भी नहीं ।
सच जो पूछो तो दिल दार तुम भी नहीं ।।
गर मुहब्बत के हकदार हम जो नहीं ।
इश्क के फिर परस्तार तुम भी नहीं ।।
बिन बुलाये जो गलियों में आए अगर ।
अपनी हस्ती मिटाएं तो हम क्या करे ।।

हमने.....

नायक .... तुम हो शम्मा तो परवाने हम दिल रूबा ।
शम्मा जलते ही परवाना उस पे मिटा ।।
अपनी हस्ती मिटा दी जहां से सनम ।
इश्क में फिर भी पीछे हटे न कदम ।।
इश्क में नाम रोशन तो कर जाएंगे ।
फिर भी वो आजमाएं तो हम क्या करे ।

तुमने.....

नायिका.....

मैं हूं शम्मा तो जलना मेरा काम है ।
बिन जले भी कहां मुझको आराम है ।।
मुफ्त में मुझ को बदनाम करते हैं ये ।
दम मुहब्बत का झूंठा ही भरते हैं ये ।।
शम्मा जलती है खुद रोशनी "मयंक" ।
जलते परवाने आएं तो हम क्या करें ।।

हमने.....

नव वर्ष का स्वागत

आओ चले आओ शाम हो गई ।
आया नया साल सभी हो खुश हाल ।।
पुराने वर्ष की विशम हो गई ।
शाम हो गई.....

आगे ही देखो पीछे न मुड़ना ।
नई आशाओं से आगे ही बढ़ना ।।
असफलता मेहनत से जाम हो गई ।
शाम हो गई.....

नये साल की तो उमंगे नई हैं ।
नये सूर्योदय की तरंगे नई है ।।
निराश के मुंह में लगाम हो गई ।
शाम हो गई.....

आया नया दिन ये सूबहा भी नई हैं ।
बिदा उस रात की जो पीछे रही है ।।
नूतन वर्ष ऊषा ललाम हो गई ।
शाम हो गई .....

कान्हा की बांसुरी

बाजे बाजे रे बासुरियां बृज के नन्दलाल की ।
लागो माह सावन को देखो हरियाली छाई ।।
नाचे गाएं धुम मचाएं खुशयाली छाई ।
टोली घुमें दे दे ताली बृज के ग्वाल की ।।

बाजे बाजे.....

कान्हा के संग रास रचाये सखियां भई विभोर ।
हरे हरे सावन में देखो मोर मचाए शोर ।
जय जय कार सभी बोले बृज के गोपाल की ।।

बाजे बाजे.....

लोग लुगाई झूले झुला पड़ो कदम की डाल ।
पिताम्बर कान्हा ने पिन्हो गल बैजंती माल ।।
हाथी घोड़ा कान्ह सजाए राधा पालकी ।
बाजे बाजे.....

होली खेलन आओ सखियां

होली खेलत है नन्दलाल सखियां होली खेलने आओ।
तुम होली खेलन आओ रंग भर पिचकारी लाओ।।

मुंह पर मलो अबीर गुलाल, सखियाँ।
ग्वालन संग रास रचाओ जीवन उल्लास दिखाओ।।

होली खेलत है.....

कान्हा मारी पिचकारी गोरी राधा हो गई कारी।
मुंह पर मल दीनो है गुलाल सखिया होली खेलन आओ।।

होली खेलत है.....

माता जसुमति के जाए बाबा नन्द गोद खिलाए।
जीवन भर दियो रंग फूहार सखिया।

होली खेलत है.....

होली की टोली आई संग झाँज मंजिरा ल.ई।
सब कोई नाचे दे दे ताल सखिया होली खेलन आओ।।

होली खेलत है.....

•

सावन सुहावनो

सावन आयो सुधड़ सुहावनो जी ।
एरी मोहे सजन की आवे याद ।।

सावन आयो.....

रिमझिम सावन बरसत नैन सोजी ।
एजी मेरे सजना की बोलो कोई बात ।।

सावन आयो.....

कजरा लगा के कियो सोलह शृंगार हो जी ।
हरी हरी चुड़ियां पहरीं भर २ हाथ ।।

सावन आयो.....

तीजे सनूनो सुनो सब रह गयो जी ।
एजी ऐसे नौकरिया में मारो तुम लात ।।

सावन आयो.....

●

लोक गीत

आजा पिया मैं तो बांट जोहूं गांव में।
बैठ बैठ हारी मैं अमवां को छाँव में ।।

लागे भली कोई कोयल की बोली।
बिरहा मय मोरनी डाल डाल डोली ।।

मन को जलाए ये चिड़ियों का बोलना।
तारों की डोरी बन्धा चांद का डोलना ।।

असुअन की भाषा ये किसको सुनाऊं मैं।
आजा पिया मैं तो बांट जोऊं गाँव में ।।

गांव के प्रभात में आली जो डोली।
चाकी ले आवाज घरर घरर बोली ।।

बैलन की घंटियां भी मधुर मधुर बोली।
कलियों ने अंखियन की पंखियां है खोली ।।

पर मेरे ही देखो बेड़ी पड़ी पांव में।
आजा पिया मैं तो बांट जोऊं गांव में ।।

पुरवाई संग चले बादल ये कारे।
संग संग चले मेरे चन्दा और तारे ।।

खेतन में छाई बसन्ती ये सरसों।
वादा था परसों का, बीत गये बरसों ।।

रूठे पी का "मयंक" कैसे मनाऊं मैं।
आजा पिया मैं.....

राष्ट्रीय गीत

अपने वतन की शान पे कुर्बान जाईये ।
फिर मादर-ए-वतन का कोई गीत गाईये ॥

मिट्टी यहां की चांदी से सोने से कम नहीं ।
सब धर्मों में है एकता कोई भरम नहीं ॥

बस एकता के धर्म पे इमान लाईये ।
अपने वतन की शान पे कुर्बान जाईये ॥

हो अम्न चैन और खुलूस-ओ-वफ़ा का काम ।
दुनिया में रहे इश्क मोहब्बत का ऊंचा नाम ॥

तारीख़ इस वतन की जहां को सुनाई ।
अपने वतन की शान पे कुर्बान जाईये ॥

कुछ अपनी आन बान पे कुर्बान हो गये ।
और कुछ वतन की शान पे कुर्बान हो गये ॥

आज अश्क उनकी याद में आंखों में लाईये ।
अपने वतन की शान पे कुर्बान जाईये ॥

एहसास देश प्रेम का सबसे महान है ।
ऊंची से ऊंची दोस्तों भारत की शान है ॥

इसमें "मयंक" चांद सितारे सजाईये ।
अपने वतन की शान पे कुर्बान जाईये ॥

●

होली

होली खेली मोसों आज श्याम तेने कैसी ठानी
कैसी ठानी रे भिगोय दई चुनर धानी रे
होली खेली..... ....

श्याम मोहे पनघट पे जानो गगरिया भर पानी लानो
भिगी चुनरी देख लड़ेगी सास जेठानी रे
होली खेली.....

चुनरिया मेरी मलमल की घटा कड़वाई अलवर की
फट जाएगी चुनरी करे जो खींचा तानी रे
होली खेली.....

श्याम मैं जोड़ू तेरे हाथ ठीक नई होवेगी यह बात
बदनामी से मर जाऊं हो जाऊं पानी पानी रे
होली खेली.....

कान्हा तू काहे होत उदास काल फिर आऊं तेरे पास
चुपके चुपके सो जाये जब नन्द देवरानी रे
होली खेली.....

●

गीत

याद तुम्हारी आई जब पुरवाई डोल गई
कसक एक मीठी सी मेरे मन में घोल गई

रिमझिम करता जल बरसाता आया जब सावन
बिरहा की थाती बन आया मेरे घर आंगन
राह तुम्हारी बतलाती बिजली मुख खोल गई
याद तुम्हारी आई.....

ऋतु बसन्त आया भौंरों ने गीत मधुर गाए
फूलों ने घावों पर मेरे मरहम चिपकाए
पिऊ कहां मेरी मन बतिया कोयल बोल गई
याद तुम्हारी आई.....

पतझड़ के पत्ते से बिछड़ें सदिया बीत गई
हुआ मिलन ना रोते रोते अखियां रीत गई
अमुवा की नव पल्लव कोयल हिया हिंडोल गई
याद तुम्हारी आई.....

●

रंग गुलाल की होली

होली खेलत है सांवरिया ।
बरसे रंग गुलाल ।।
बरसे रंग गुलाल अबीरा ।।
बरसे भर भर थाल ।।

होली खेलत है.....

कान्हा ने पिचकारी मारी ।
राधा झेली तन पे ।।
तन मन एसो रंगो कृष्ण ने ।
छाव पड़ी है मन पे ।।
सुध बुध खोई भई बावरिया ।
लाल भये हैं गाल ।।

होली खेलत है.....

ग्वाल बाल की होली आई ।
रंग बहारे लाई ।।
रंग कमोरी कलसा लोटा ।
मन भावे सो लाई ।।

बृज की बाचे दूर एक गुजरिया ॥
होत हाल बे हाल ॥

होली खेलत है.....

राधाजी ने रंग छटकायो।
छटा बने है प्यारी ॥
देख देख मोहित हो रहे।
बृज के सब नर नारी ॥
सुमधुर बाजे रे बांसुरिया।
जाको नहीं हवाल ॥

होली खेलत है........

शाने वतन

मेरा ये देश है हज़ारो में ।
जैसे एक चांद है सितारो में ।।
स्वर्ग जैसे है इसके सब गुलशन ।
ऐसा लगता है जैसे हो दुल्हन ।।

जैसे गुलशन कोई बहारो में ।
मेरा ये देश है हज़ारो में ।।
नदियां लहरो के इसमें बहती है ।
हर तरफ नग़मगी सी रहती है ।।

और संगीत सा है धारो में ।
मेरा ये देश है हज़रो में ।।
मोर के रक्स देखे जाते हैं ।
गीत कोयल के मन को भाते हैं ।।

ये बस है दिलो के तारो में ।
मेरा ये देश है हज़ारो में ।
फूल हसरत के इसमें खिलते हैं ।
इसमें दिल कश नज़ारे मिलते हैं ।।

बुंद है मयंक इन नज़ारो में ।
मेरा ये देश है हज़ारो में ।।
जैसे एक चांद है सितरों में ।
मेरा ये देश है हज़ारो में ।।

●

गीत

मेरे ग़म मुस्ताक़िल सुनले ए मेरे दिल ।
हाल सारा ।।
क्या कहूं मुझको खुशियो ने मारा ।।।
फूल मांगे थे कांटे मिले हैं ।
और न उम्मीदे गुलशन खिले हैं ।।
हिज्र के ग़म मिले ।
है यही सिल सिले ।।
जिसने मारा ।।।
क्या कहूं.....
चांदनी दील जलाती रहेगी ।
और याद उनकी आती रहेगी ।।
इक सहारा है ये ।
जाँ से प्यारा है ये ।।
ग़म हमारा ।।।
क्या कहूं.....

जीवन की रेल

रेल चली जीवन की रेल चली
दिन रात पीछे धकेल चली-रेल चली.....

पहला स्टेशन है माया मोह नाम का
इस पे रूका जो कोई रहा नहीं काम का
धर्मो इमान के व्यापारी सभी है यहां
भर माया इसमें, उसे पीछे धकेल चली-रेल चली.....

दूजा स्टेशन लोभ क्रोध काम है
छल कपट कुटिलता यहाँ पे सरे आम है
इस पे रुका न रहा दीन का न दुनिया का
सबको दिखाकर ये जीवन का खेल चली-रेल चली....

अगला स्टेशन है धर्म और इमान का
रिश्ता मधुर है इनसान से इनसान का
भेद नहीं है कोई निर्धन धनवान का
छोटे बड़ों को लेकर ये मेल चली-रेल चली.....

अन्तिम स्टेशन है जीवन विराम का
बीतेगा इंधन बस नाम ले लो राम का
लेखा जोखा कर लो अच्छे बुरे काम का
मौत सबकी आंखों में डालकर नकेल चली-रेल चली....

●

गीत

ऐक भाषा
नेक भाषा
देश की
परिवेष भाषा
भारती
जगमगाते दीप से
शुभ्र जैसे सीप से
शुभ्र निजकर कमल से
शुद्ध सुरमय विमल से
मगल मन साव से
उतारती आरती
एक भाषा नेक भाषा
भारती
देववाणी देव नगरी
कलश अमृत पूर्ण गागरी
मधुर वाणी सुरभि वाणी
हर्ष पुलकित सभी प्राणी
भाग्य और सौभाग्य की
सवारती
एक भाषा नेक भाषा
भारती

झूला

झूला पड़ो कदम की डार, सखियां झूला झूलन आओ
तुम झूला झूलन आओ सावन में धूम मचाओ
झूला पड़ो..... .. ..

झूला झूले राधा प्यारी, सुध-बुध खों कर के सारी
दिल में कान्हा रही संवार—सखियाँ .....

झूला झूले बाबा नन्द घर में जिनके आनन्द कन्द
जिनके गल में वैजन्ती हार—सखियाँ .....

झूले सखियाँ और सतभामा झूला झूले कृष्ण सुदामा
नैनन बहे स्नेह की धार- सखियाँ.....
तुम झूला झूलन आओ, कान्हा संग रास रचाओ
ये बँसी धुन रही पुकार—सखियाँ... .. ..

●

भजन

●

श्याम बिना मोहे कछु भावत नाहीं ।

श्याम बिना भयो हर घर सूनो, मन हरसावत नाहीं ।।

झूला पडयो कदम्ब की डारी कोउ झुलावत नाहीं ।

रंग मटकिया थार अबीरा कोउ लगावत नाहीं ।।

बंसी कहूं उदास पड़ी हैं कोउ बजावत नाहीं ।

बरसाने की कुन्ज गलिन में रास रचावत नाहीं ।।

कहत 'मयंक' राह तके अखियां दरस दिखावत नाहीं ।

श्याम बिन मोहे कछु भावत नाहीं ।।

●

भजन

●

श्याम तुम बंशी आन बजाओ
बशी की धुन सुन बिन सोए ब्रज को, आन जगाओ

राधा के संग सुध बुध भूली सखियां देखें सारी
बाबा नंद, सखा, गुमसुम है बृज के सब नर नारी
भटके हुए प्रिय भक्तों की नैया पार लगाओ
श्याम तुम ... ...

गैय्या, बछिया, बछडा बन मे कोई नहीं रम्भाय
मन मोहन गिरधारी इनका कोई नहीं सहाय
मूक शिथिल प्राणों में स्वामी आ उल्हास जगाओ
श्याम तुम... ....

यह पापी संसार न जाने तुम्हरे नाम की माया
भटक रहा भवसागर में, तेरा रुप नहीं मन लाया
गीता में जो वचन दिया था उसको फिर दोहराओ
श्याम तुम ... ...

भक्ति बिना नहीं शक्ति जगत में कैसे तुझको पाऐं
ज्ञान ध्यान को समझत नाहीं बस तेरे गुण गाऐं
है मयंक प्यासा तेरे दर्शन का, दरस दिखाओ
श्याम तुम ....

●

भजन

●

मुझ पर भी करम करना जरा कृष्ण कन्हैया
सागर में हूं जीवन की, भंवर में मेरी नैय्या

जीवन के अंधेरों में मेरे कर दे उजाला
दे दरस हमें अपना कभी नन्द के लाला

बन्सी की मधुर तान सुना बँसी बजैय्या
मुझ पर भी दया करना जरा कृष्ण कन्हैया

गीता में दिया था जो वचन, आज निभादे
भटकी हुई दुनिया को जरा राह दिखादे

कहता 'मयंक' आ भी जा बलराम के भैया
मुझ पर भी दया करना जरा कृष्ण कन्हैया

●

जो तुम्हारे क़रीब होता है !
वो बड़ा खुश नसीब होता है !!

जब तसव्वुर में आप रहते हैं !
वो भी लम्हा अजीब होता है !!

जिसको हम दिल से प्यार करते हैं !
वो ही इक दिन रकीब होता हैं !!

जब भी आंखों को बन्द करते है !
पास अपना हबीब होता है !!

याद जब वो " मयंक " आते है !
सारा आलम अजीब होता है !!

●

किदग्रात

●

गुलशन में बहारें कभी खुशियां नहीं लाई
तकदीर में थी ठोकरे हर मोड़ पे खाई
वो और है जिनको मिली थी सैकड़ों खुशियां
और मेरे हिस्से में तो खुशियां नहीं आई

खुशी है चन्द लम्हों की मगर आंसू तो बहते हैं
खुशी में भी ये बहते हैं गमों में भी ये बहते हैं
जमाने में कोई ए-काश आंसू को समझ सकता
किसी के प्यार की ये दास्ता आंखों से बहते हैं

कभी जाहिर मेरे इस के मैं जजबात करु
मुझ से तू बात करे तुझ से भी मैं बात करुं
तेरा यादों का लगा रखता हूं मैं सीने से
दिल में हसरत है "मयंक" उससे मुलाकात करुं

●

कितग्रात

निगाहों के खँजर न दिल पर चलाग्रो
करिश्मा सरे बज़्म यूँ न दिखाओ

ये अँदाज तेरा मेरी जान लेगा
न नज़रे झुकाग्रो न नज़रे उठाग्रो

जिनके चेहरे में शरमा रहा चन्द्रमां
उसके चेहरे पै कुर्बान जान-ग्रो-जिगर

जिसकी ज़ुल्फें खुले,हो घटा का गुमां
उसकी ग्रागोश मे होते शामो सहर

गज़ल

हमारे प्यार पे ए दिलरुबा शकी लाओ ।
वफा-ए-शोक को न इस तरह से ठुकराओ ।।

तमाम उम्र तड़पते रहे तुम्हारे लिये ,
वफा का वास्ता देते हैं अब चले आओ ।।

नहीं है प्यार में रस्म-ओ-रिवाज की परवा ।
तमाम रस्म जमाने की तोड़कर आओ ।।

जो मेरे प्यार का लेना है इम्तहां तुमको !
जिगर को चीर दूं तस्वीर-ए-यार ले जाओ ।।

जो उनकी राहों में काली गमों की सियाही हो ।
'मंयक' चांदनी बनकर छिटक छिटक जाओ ।।

●

गज़ल

कहेंगे आप हमसे क्या नहीं कहने के कुछ काबिल ।
खबर है के दो शर्मिंदा चुराया है हमारा दिल ।।

निगाहों ही निगाहों में उड़ाया है हमारा दिल ।
सफाई पेश भी कर दी मगर होगा न कुछ हासिल ।।

पहुंच जाएंगे एक दिन मंजिल-ए-मकसूद पर दोनों ।
महोब्बत प्यार की हमसे नहीं है अब दूर मंजिल ।।

रहो तुम दूर कितने भी मगर दिल से नहीं जाना ।
चले आओ करो नजदीकियों में दूरियां शामिल ।।

यकीनन-ए-मयंक वो मंजिल-ए-मकसूद पर होंगे ।
बिछादो रास्ते में जो सितारे कर रहे झिलमिल ।।

●

ग़ज़ल

बन जाए बनाने से वो तदबीर चाहिये ।
जो रूठ के मन जाए वो तकदीर चाहिये ।।

दिन रात सुबहो शाम उसे ढूंढता हूं मैं ।
बस जाए जो नजर में वो तस्वीर चाहिये ।।

इक दिन खुदा मिलाएगा करते रहो दुआ ।
ए-दोस्त बस दुआओं में तासीर चाहिये ।।

एक आरजू में जीते हैं बरसों से दिलरुबा ।
इक तीर तेरी नजरों का बे-पीर चाहिये ।।

जो इश्क के तूफां को 'मयंक' आज थामले ।
इक रेशमी जुल्फों की वो जंजीर चाहिये ।।

●

गज़ल

आप आजाएं तो वो रात हंसी आजाए ।
शब-ए-फुर्कत की वो सोग़ात हंसी आजाए ।।

वस्ल की शब मिलें ऐसी नहीं किसमत मेरी ।
काश इक वस्ल-ए हंसी आ जाए ।।

तेरी यादों के जनाजे नहीं उठ सकते हैं ।
हसरतों की कोई बारात हंसी आ जाए ।।

हुवे मंसूब मेरे नाम से जो अफसाने ।
उन फ़सानों में तेरी बात हंसी आ जाए ।।

ये तमन्ना है मयंक आखरी दिल में मेरे ।
हाथ में मेरे तेरा हाथ हंसी आजाए ।।

●

कुछ गीत अनाम के नाम

गीत
गजल
संग्रह

के. के. सिंह. मयंक